नवंबर - दिसंबर 2011 वर्ष - 2, अंक - 9

जीवन का मार्ग

विषय वस्तु

संपादकीय	01
वचन Vs पाप	02
सच्चा मन परिवर्तन	06
दीवट ..	10
शब्द पहेली	12
सिद्ध उपहार	13
बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता	14
How to Pray to the Lord	15
रंग भरो	17

मसीही विश्वासियों की आत्मिक उन्नति एवं वचन में बढ़ती के उद्देश्य से
प्रकाशित एवं प्रसारित अर्न्तसामुदायिक द्विमासिक पत्रिका

पत्र व्यवहार के लिये पता

जीवन का मार्ग

पोस्ट बॉक्स् न. - 27,

बिलासपुर - 495 001, छ.ग.

संपादकीय

दिसंबर का महीना! हमारे जीवन में त्योहार की खुशियाँ लेकर आता है। दो हजार वर्ष पूर्व बैतलहम की गौशाले में नन्हे बालक के रूप में यीशु का जन्म हुआ था। तब से आज तक दुनिया में बहुत से महापुरुष आये और चले गये। परन्तु यीशु ने हमारे लिये जो किया वह अनुपम था।

यीशु के जन्म ने संसार के इतिहास को दो भागों में बाँट दिया। ईसा पूर्व और ईस्वी सन्। यीशु का जन्म हमारे जीवन को भी दो भागों में बाँटता है। जब हमारे जीवन में यीशु जन्म लेता है तब हमारा पापमय अतीत कहीं पीछे छूट जाता है और हम एक नया सफर प्रारंभ करते हैं। हाँ, यीशु का हाथ थाम कर...।

आईये, इस क्रिसमस को व्यर्थ न जाने दें! अपने दिल रूपी चरनी में यीशु को जगह दें। उसे अपने जीवन में जन्म लेने दें।

प्रभु की सेवा में

संपादक

वचन Vs पाप

गतांक से आगे

साजु जे. मैथ्यू
तिरूवल्ला, केरल

इस्राएल के राजाओं को प्रभु द्वारा किया गया एक स्पष्ट सन्देश है। "... जब वह राजगद्दी पर विराजमान हो, तब इसी व्यवस्था की पुस्तक, जो लेवीय याजकों के पास रहेगी, उसकी एक नकल अपने लिये कर ले। और वह उसे अपने पास रखे, और अपने जीवन भर उसको पढ़ा करे, जिस से वह अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, और इस व्यवस्था और इन विधियों की सारी बातों के मानने में चौकसी करना सीखे; जिस से वह अपने मन में घमण्ड करके अपने भाइयों को तुच्छ न जाने, और इन आज्ञाओं से न तो दाहिने मुड़े और न बाएँ; जिस से कि वह और उसके वंश के लोग इस्राएलियों के मध्य बहुत दिनों तक राज्य करते रहें" (व्यवस्थाविवरण 17:18-20)।

यहोवा के प्रति पाप न करने के लिये अनिवार्य बातों में सबसे प्रथम, राजा के पास व्यवस्था की पुस्तक की प्रतिलिपि का होना है। दूसरी बात उसे व्यवस्था को जीवनभर पढ़ना है। वचन को अपना बनाकर उसे लगातार पढ़ने और ग्रहण करनेवाला व्यक्ति ही पाप से दूर रहता है।

एक सौ उन्नीसवां भजन वचन का गीत है। उसमें का एक एक शब्द मुँह को मीठा लगता है। इसे जानने के लिये 119 वां भजन एक बार पूरा पढ़कर देखिए (बहुत बड़ा भजन होने के कारण कई बार हम उसे नहीं पढ़ते हैं)। इस भजन में वचन और पाप किस प्रकार से एक दूसरे के विपरीत हैं इस बात को बताने के लिये कई एक चित्रण दिए गए हैं।

पहले पद को ही उदाहरण के लिये रूप में लें। "क्या ही धन्य हैं वे जो ...यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं!"

प्रारंभ में ही भजनकार कहता है कि वचन ही निष्पाप होने की दशा प्रदान करता है। सही रीति से यदि अनुवाद किया जाए तो इसे इस प्रकार कहा जा सकता है, "जिन्होंने अपने मार्गों को निःष्पाप किया हो, जो यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं,"। वचन का अनुसरण करने की व्यवहारिक स्थिति निःष्पाप होना। वचन का अनुसरण करने वाले निःष्पाप हुए बिना नहीं रह सकते हैं। इसलिये भजनकार एक युवक से कहता है,

"एक युवक (Young Man - 'लड़का' की तुलना में अधिक उपयुक्त शब्द 'युवक' शब्द है) किस प्रकार अपने मार्ग को निष्कलंक रख सकता है?" परमेश्वर के वचन

के द्वारा अपने मार्गों की चौकसी करने से (पद 9)।

व्यवस्था एक युवक की रखवाली करता है कि पाप के मार्ग पर उसके कदम फिसलने न पाएं। वचन पाप के विरूद्ध खड़ा रहता है। वह उसके पाँव के लिये दीपक और मार्ग के लिये उजियाला है (पद 105)।

तेरे प्रति पाप न करने के लिये मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है (पद 11)। यह कहते हुए भजनकार पुनः हमें स्मरण दिलाता है कि वचन और पाप दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं। वह पुनः कहता है कि "मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर; और करूणा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे" (पद 29)। व्यर्थ मार्ग और परमेश्वर का वचन यहां पर भी एक दूसरे के विपरीत हैं।

भजनकार जो कहता है कि वह पाप न करने के लिये वचन को हृदय में संग्रहित कर रखा है, आगे कहता है, मैंने अपने पाँवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है (पद 101)। यह पद हमें समझाता है कि जिस प्रकार वचन हमें पाप से दूर करता है, उसी प्रकार पाप भी हमें वचन से दूर करता है। गलत मार्गों पर यदि मेरा पाँव चले तो वचन पर चलना मेरे लिये असंभव हो जाता है। यदि मैं व्यवस्था से दूर रहता हूँ तो दुष्टता करना मेरे लिये प्रशंसनीय बात हो जाती है (नीतिवचन 28:4)।

दुष्टता और वचन के एक दूसरे से विपरीत दिशाओं में होने के कारण याकूब दुष्टता की अधिकता को छोड़ देने के लिये कहता है। "इसलिये सारी मलिनता और बैरभाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है" (याकूब 1:21)।

'दुष्टता की अधिकता' प्रयोग पर ध्यान दीजिए। दुष्टता की अधिकता को यहाँ पर एक विशेषण के रूप में बताया गया है। यह कैंसर के समान फैलता जाता है।

कैंसर की विशेषता को तो आप जानते ही हैं। यदि एक कोशिका में कैंसर होता है तो वह वहीं तक सीमित नहीं रहता है। चारों ओर की एक एक कोशिका को वह अपने चपेट में लेते जाता है। उसका कार्य शब्द रहित होता है। किन्तु जिस कोशिका में कैंसर होता है उसे ढूंढ़ कर यदि नाश न किया जाए तो वह संपूर्ण जीवन को ही नाश करने की दिशा में बढ़ जाता है। आत्मिक जीवन में भी दुष्टता की छोटी कोशिकाओं को ढूंढ़ कर यदि नाश न किया जाए तो वह अगली कोशिका को भी अपनी चपेट में ले लेता है और अन्त में आत्मिक मृत्यु का ही कारण बन जाता है। अमन के जीवन में भी यही हुआ।

हम कह सकते हैं कि अमन आत्मिक जीवन में बहुत उत्साही था। कलीसिया की हर एक गतिविधि में वह आनन्द के साथ सहभागी होता था। इसी दौरान एक दिन दोस्तों की बर्थ डे पार्टी में उसे शामिल होना पड़ा। दोस्त के जीजा ने जर्मनी से जो महँगी व्हिस्की लाया था, वह उनकी पार्टी का मुख्य आकर्षण था। एक बारगी तो उसने कहना चाहा कि वह यीशु का विश्वासी है और शराब से दूर रहता है, फिर भी दोस्तों ने उसे प्रलोभन दिया कि यह

एक मुश्किल से मिलनेवाली व्हिस्की है और इसे पीना तो किस्मत की बात है। वह उस प्रलोभन से बच न सका। एक प्याला उसने भी थाम लिया।

उस दिन अमन अपराधबोध के साथ घर वापस पहुँचा। बिस्तर पर गिरने से पहले उसने प्रार्थना किया कि हे परमेश्वर मुझे क्षमा कर। उसके बाद वह सो गया।

अगले दिन इतवार था। सुबह उठने पर कल की बातें उसे फिर से स्मरण हो आईं। उसे बहुत दुःख हुआ। ओह्! मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

पिछली शाम को याद कर वह बिस्तर पर ही पड़ा रहा....। अन्ततः आराधना का समय हुआ तो वह सोचने लगा। जाना चाहिए कि नहीं? पाप करने के बाद आराधना में जाना उचित है या नहीं?

पहले तो उसने सोचा कि आराधना में नहीं जाना है। किन्तु नहीं जाने पर सबको कारण बताना पड़ेगा, इसलिये वह आराधना में जाने का निर्णय लिया। कुछ भी हो आज गवाही नहीं दूँगा। इसलिये पद ढूंढने के लिये उसने बाइबल भी नहीं खोला। उसे स्मरण आया कि कल भी उसने बाइबल नहीं पढ़ा था।

आराधना में उसे एक और रूकावट का अहसास हुआ। वह दुविधा में पड़ गया कि उसे प्रभु भोज में भाग लेना चाहिए या नहीं। अन्ततः लोगों के सवालों से बचने के लिये उसने प्रभु भोज के लिये हाथ बढ़ाया। आराधना के अन्त में यह सोचकर वह खुद को तसल्ली देने लगा कि अयोग्य होने के बाद भी प्रभु भोज लेने से उसे कुछ भी तो नहीं हुआ।

शाम को अमन के दोस्त ने उसे फोन किया। उसने कहा, "एक बोतल व्हिस्की और बाकी है,... आज की शाम उसके साथ बिताते हैं।"

अमन ने मना करना चाहा, "नहीं दोस्त, अभी तो कल का.....।"

"कल कुछ हुआ क्या? आसमान तो टूट कर नहीं गिर पड़ा ना? तू आ...।" कहकर दोस्त ने फोन रख दिया।

"अरे, आओ आओ अमन, चलो एक राउण्ड हो जाए।" दोस्तों ने उसे निमन्त्रण दिया।

"अरे नहीं....ताश खेलना तो हमारी कलीसिया में....।" अमन ने मना करना चाहा।

"शराब पीने से जब परमेश्वर ने क्रोधित नहीं हुआ, तो जरा सा पत्ते खेल लेने में क्या हर्ज है? आ... बैठ।"

"फिर भी.... यह तो जुआ है न?"

"इसमें क्या जुआ है? यहाँ कोई भी पैसा रखकर नहीं खेल रहा है," दोस्तों ने कहा।

वह उनके साथ बैठकर ताश खेलने लगा। उस रात वह अधिक अपराधबोध के साथ बिस्तर पर लेटा। सोने से पहले उसने प्रार्थना की, किन्तु उसे बाइबल पढ़ने की इच्छा नहीं हुई।

बाद में एक दिन अमन ने पैसा रखकर ताश खेला। धूम्रपान भी साधारण सी बात

हो गई। आज वह पैसा खर्च कर शराब भी पीता है।

कलीसियाई बातों में अधिक सहभागी न होने पर भी वह आराधना में जाता है। वह जानता है कि वह कई एक गलत काम करता है। एक परम्परा के समान वह प्रतिदिन प्रार्थना किया करता है। किन्तु उसके बाइबल पर धूल जमने लगी है।

अमन ने छोटे रूप में गलती करना प्रारंभ किया था। शराब पीना दिन में एक प्याला तक सीमित नहीं रहा। वह बढ़कर शराबखोरी और पत्ते खेलना और जुआ खेलने तक पहुँच गया। आगे चलकर उसकी जिन्दगी बिखर गई। आत्मिक रूप से भी वह विनाश के कगार पर आ गया।

हर एक दुष्टता इसी प्रकार होती है। दुष्टता एक तक ही सीमित नहीं रहता है। वह कैंसर के समान जीवन की सभी स्थितियों को अपने चपेट में ले लेती है। चूँकि दुष्टता वचन से आपको दूर करती है इसलिये याकूब दुष्टता की अधिकता रूपी कैंसर को छोड़कर वचन को स्वीकार करने के लिये कहता है।

याकूब यूँ ही यह नहीं कहता है। प्रेरित याकूब वचन को सुनने से रोकने वाली पूर्व धारणा रूपी कान की गन्दगी को और वचन से हमें दूर करने वाली कैंसर समान दुष्टता के साथ निर्भयता से व्यवहार करने के लिये कहता है। साधारण सा व्यवहार उसे जड़ से नहीं उखाड़ फेंकता है। उन्हें धोने से काम नहीं चलेगा। उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना है (याकूब 1:21)। जिस प्रकार सांप केंचुल उतारता है, ऐसा एक शब्द यहां पर प्रयोग किया गया है। केंचुल उतारनेवाला सांप केंचुल का बाकी हिस्सा नहीं रखता है। सांप द्वारा केंचुल उतारने के समान पूर्व धारणा रूपी कान की गन्दगी और कैंसर समान दुष्टता को हमें उतार फेंकना है।

अगले कदम पर ध्यान दीजिए। यदि वचन प्रवाह को रोकने वाली पूर्व धारणा और दुष्टता हट जाएं तो फिर वचन को नम्रता के साथ स्वीकार कर लेना चाहिए।

बाइबल पहेली प्रतियोगिता क्रमांक - 7 का हल

सभी प्रश्न मरकुस के सुसमाचार से लिये गये थे।

1. 7:32
2. 14:3
3. 10:46
4. 9:25
5. 2:3
6. 5:34
7. 5:41
8. 4:30,31
9. 3:35
10. 9:29

सच्चा मन परिवर्तन

लूका 19:1-10

जक्कई की पृष्ठभूमि एक धनी व्यक्ति की थी। वह एक अच्छे ओहदे पर काम करनेवाला व्यक्ति था। लेकिन उसके हृदय के कोने में कहीं न कहीं एक भूख थी, एक प्यास थी। वह यीशु को देखना चाहता था। मैं समझता हूँ कि उसने काफी समय से यीशु के विषय में सुन रखा था। शायद, बहुत से लोगों के मुख से उसने यीशु के आश्चर्यकर्मों के विषय में, यीशु के साथ चलनेवाली भीड़ के विषय में उसने सुना था। और आज जब उसने सुना कि यीशु आ रहा है, तो अपनी सारी कमजोरियों के बाद भी, अपनी सारी कमियों और बाधाओं के बाद भी वह यीशु को देखने का प्रयास करता है।

इतना तो निश्चित है कि यदि वह यीशु को पहले ही देख लिया होता तो शायद वह सन्तुष्ट हो जाता। वह केवल यीशु को या उसके बाहरी रूप को देखना चाहता था। शायद, वह यह देखना चाहता था कि यीशु के पीछे इतने लोग क्यों चलते हैं? यीशु के भीतर ऐसा क्या है, कि लोग यीशु के पीछे भीड़ की भीड़ चलने लगती है? लेकिन जब यीशु उसके जीवन में आया तब उसे अपने जीवन की कुछ कमियाँ दिखाई दी।

वचन कहता है, कि वह नाटा था इसलिये उस भीड़ के कारण यीशु को वह देख नहीं सकता था। उसके जीवन में एक शारीरिक कमी थी जिसके कारण वह यीशु को देखने में असमर्थ था। वह इस शारीरिक कमी को यीशु को देखने में बाधक बनने नहीं देता है। वह अपनी तरफ से प्रयास करता है। पद चार कहता है, कि तब उसको देखने के लिये वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु उसी मार्ग से जाने वाला था।

यीशु को देखने की इच्छा इस व्यक्ति के जीवन में इतनी बलबती हो उठी कि वह यीशु के विषय में हर प्रकार की जानकारी जुटाता है कि वह किस रास्ते से जानेवाला है। क्या प्रयास करने से मैं यीशु मसीह को देख पाऊँगा? और उसने एक उपाय किया। इस उपाय के विषय में यहाँ लिखा हुआ है, कि वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, और यीशु मसीह को देखने का प्रयास करने लगा।

प्रिय मित्रों, मानवीय जीवन में हम भी बहुधा ऐसा ही करते हैं। परमेश्वर को देखने के लिये, परमेश्वर को अनुभव करने के लिये हमारे भीतर इच्छा उत्पन्न होती है और हम तरह-तरह के प्रयास करते हैं। हम अक्सर ऐसे प्रयास करते हैं कि हम अपने आपको सन्तुष्ट कर लें कि येन केन प्रकारेन हमारे भीतर की आत्मिक भूख शान्त हो जाए। ऐसा ही कुछ जक्कई यहां पर करता है। जक्कई आगे दौड़कर एक पेड़ पर चढ़ जाता है, क्योंकि यीशु उसी मार्ग से जानेवाला था।

प्रेरितों 4:12 में हम पढ़ते हैं, किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें। स्वर्ग के नीचे पृथ्वी पर कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है। यह बहुत ही स्पष्ट रीति से बताता है कि उद्धार का मार्ग क्या है। वचन कहता है, यीशु के सिवाय और कोई नाम इस पृथ्वी पर नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकते हैं।

जक्कई का प्रयास जो उसने यीशु को देखने के लिये किया। जिसके लिये वह आगे आगे दौड़ता है, और भीड़ की परवाह न करके पेड़ पर चढ़ता है और यीशु को देखने की इच्छा करता है, इन सब के द्वारा वह अपने भीतर की जिज्ञासा को शान्त करना चाहता है। वह केवल यीशु को, या उसके बाहरी रूप को या उसके जो बाहरी आकर्षण था जिसके कारण लोग उसकी ओर आकर्षित होते हैं, उन सबको देखना चाहता था।

5 वें पद में वचन कहता है कि जब यीशु वहां पहुंचा तो ऊपर दृष्टि करके कहा, हे जक्कई, झट उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। इस पद को पढ़ते हुये मैं कल्पना कर रहा था, कि यदि यीशु ऊपर की ओर नहीं देखता तो क्या होता? शायद, जक्कई यीशु को देख लेता और जक्कई वहाँ से उतर कर अपने घर चला जाता और वह इस बात से सन्तुष्ट हो जाता कि उसने यीशु को देख लिया। शायद उसके जीवन की बहुत समय की एक इच्छा पूरी हो जाती कि उसने आज यीशु को देख लिया। और शायद वह घर जाकर अपने लोगों से घटना का वर्णन करता और कुछ दिनों बाद इस घटना को भूल भी जाता। लेकिन यहाँ पर एक अद्‌भुत घटना घटती है। जब यीशु उस स्थान पर पहुंचता है तो वह कहता है, कि "जक्कई झट उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।"

6 वें पद में हम जक्कई की प्रतिक्रिया को देखते हैं। लिखा है, वह आनन्द के साथ उसे अपने घर ले गया। जैसे ही यीशु के शब्द जक्कई के कानों में पड़े उस का मन आनन्द से डोल उठा। शायद उसने सोचा भी नहीं था कि यीशु जैसा व्यक्ति के पांव कभी उस के घर में पड़ेंगे।

यहूदी पृष्ठभूमि में यह सर्वसाधारण था कि एक आम यहूदी भी चुंगी लेने वालों से घृणा करता था। क्योंकि उनकी समझ थी कि चुंगी लेनेवाले लोग पापी लोग हैं। वे एक अन्यजाति राजा के लिये कर लेते थे और इस के लिये वे लोगों को सताते भी थे। लेकिन यहां पर जब जक्कई यीशु के शब्दों को सुनता है... यीशु के निमन्त्रण को पाता है तो तुरन्त उसे स्वीकार करता है। प्रभु यीशु मसीह का निमन्त्रण संसार के प्रत्येक लोगों के लिये है। जक्कई ने यीशु मसीह के निमन्त्रण का उत्तर दिया। वह तुरन्त पेड़ से उतरा और आनन्द के साथ यीशु को अपने घर ले गया।

जब परमेश्वर का वचन हमारे कानों में पड़ता है,.... जब परमेश्वर अपने राज्य में प्रवेश करने का निमन्त्रण हमें देता है तो हमें तुरन्त प्रतिक्रिया देनी चाहिये। यहाँ जक्कई की प्रतिक्रिया का वर्णन करने के लिये तुरन्त शब्द उपयोग किया गया है।

जब परमेश्वर का वचन हमारे कानों में पड़ता है, जब उस का वचन हमें प्राप्त होता है तो हमारी प्रतिक्रिया इसी प्रकार होनी चाहिये। जक्कई तुरन्त उतरता है और यीशु को आनन्द के साथ

अपने घर ले जाता है। परमेश्वर यही चाहता है, कि यीशु मसीह का सुसमाचार जब भी हमें मिले, ...जब भी हमें मन फिराव का अवसर मिले, हम तुरन्त प्रतिक्रिया दें। हम तुरन्त उस निमन्त्रण को स्वीकार करें जो परमेश्वर अपने वचन में हमें देता है।

परमेश्वर का वचन कहता है, कि परमेश्वर का राज्य निकट है। मन फिराओ क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है। बिना मन फिराए हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये मन फिराना एक बहुत बड़ी आवश्यकता के रूप में बाइबल हमें बताती है।

मन फिराने का अर्थ क्या है? मन फिराने का अर्थ है, अपने मन को वापस फेर लाना। हमारा मन जो शैतान की ओर जाता है उसको हम वापस परमेश्वर की ओर फेर लाते हैं। और इसी को वचन मन फिराना कहता है। प्रभु यीशु मसीह ने जब अपनी सेवकाई शुरू की तब यह कहते हुये उसने सेवकाई शुरू की कि मन फिराओ क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है। जक्कई ने मन फिराया। उस ने यीशु मसीह को अपने घर में निमन्त्रित किया, उसे अपने घर ले गया। जक्कई ने न केवल यीशु को अपने घर में निमन्त्रित किया, बल्कि अपने जीवन में भी ग्रहण किया।

जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ। तब यीशु ने उससे कहा, आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।

प्रभु यीशु मसीह जब जक्कई के जीवन में और उसके घर में आता है, तब वहां पर कई बातें घटती हैं। सबसे पहले, जक्कई के मन में पापांगीकार करने की भावना प्रबल होती है। एक व्यक्ति क्यों अपने पाप को अंगीकार नहीं कर पाता है? शायद, अपने सामाजिक स्तर को खोने के डर से .....। या फिर, शर्मिन्दगी से बचने के लिये वह अपने पाप का अंगीकार करने से बचा रहता है। लेकिन वचन यहां हमें बताता है, कि पाप का अंगीकार करना किसी व्यक्ति के लिये तब संभव होता है, जब परमेश्वर उसके जीवन में काम करता है। अपने पाप का अंगीकार करना किसी भी व्यक्ति के लिये कठिन होता है। क्योंकि यह शैतान के राज्य में से निकल कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है। और शैतान इतनी आसानी से किसी भी व्यक्ति को अपने राज्य से बाहर निकलने नहीं देता है। जक्कई ने इतना साहस दिखाया कि उसने अपने पापों का अंगीकार किया। उसने कहा, "हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी संपत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।"

यीशु ने जक्कई से यह नहीं कहा कि उसे अपनी संपत्ति को कंगालों को बांट देना चाहिये या उसने किसी का कुछ अन्याय करके ले लिया है और उसे चार गुना वापस करना चाहिये। क्योंकि व्यवस्था इस प्रकार कहती है, कि यदि कोई व्यक्ति किसी का कोई चुरा लेता तो उसे चार गुना वापस भरना पड़ता था।

आज जक्कई इस प्रकार से निर्णय क्यों लेता है? जक्कई कहता है, मैं चार गुना वापस करने

के लिये तैयार हूँ। यीशु ने आकर उसके जीवन में जो उथल-पुथल मचाई, यीशु के आने के द्वारा जो परिवर्तन उसके जीवन में आया उसका परिणाम यह हुआ कि जक्कई स्वयं को चोर कहता है। वह कहता है, मैं ने दूसरों की संपत्ति छीन कर रखी है। वह कहता है, कि मैंने लोगों की संप्पत्ति अपने घर में इकट्ठा कर उन्हे कंगाल कर दिया है। अब मैं परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के योग्य नहीं हूँ। और आज वह सही माइने में व्यवस्था का पालन करना चाहता है और वह कहता है कि मैं चार गुना वापस करता हूँ। उसकी इस इमानदार घोषणा पर यीशु मसीह कहता है, "आज इस घर में उद्धार आया है।"

इस पद को पढ़ते हुये मैं सोच रहा था कि 8 वें पद से पहले यीशु ने इस बात को क्यों नहीं कही। जबकि 7 वें पद में ही यीशु मसीह उसके घर में आ चुका है। लेकिन इन सारी घटनाओं के बाद वह कहता है, कि आज इस घर में उद्धार आया है। लेकिन यह घोषणा करने के लिये यीशु ने जक्कई के पापांगीकार तक क्यों इन्तजार किया?

रोमियों 10:9 के अनुसार, यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करना अर्थात अपने पाप अंगीकार के बाद यीशु को अपने जीवन की प्रभुता देना है। यह आसान कार्य नहीं होता है। हमारे जीवन की प्रभुता को हम अपने हाथों में रखना चाहते हैं। हम किसी को भी अपने जीवन का लगाम देना नहीं चाहते हैं।

किसी को प्रभु कहने का मतलब होता है, अपने जीवन का स्वामित्व उसके हाथ में दे देना। उस व्यक्ति को अपने जीवन का स्वामी कहना। उससे कहना कि आज से जो तू कहेगा वह मैं करूँगा, जैसा तू चाहेगा वैसा मैं जिऊँगा।

इस पद का भेद क्या है? यह पद हमें बताता है कि संसार में रहते हुये हमारे विचारों पर, हमारी भावनाओं पर, हमारी इच्छाओं पर शैतान की प्रभुता होती है। हम शैतान के राज्य में रहते हैं। शैतान की बातें सुनते हैं, उसकी इच्छानुसार हम कार्य करते हैं। लेकिन जब हम यीशु को प्रभु स्वीकार करते हैं, यीशु को अपने जीवन का लगाम दे देते हैं, तो वह हमारा हाथ पकड़ कर हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कराता है। जब जक्कई अपने पाप का अंगीकार कर लेता है, तब यीशु घोषणा करता है, "आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिये कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है।"

संसार में बहुत से लोग आए, बहुत से लोगों ने स्वयं ईश्वर होने का दावा भी किया, बहुत से लोगों ने ईश्वर के पास पहुंचने के लिये तरह-तरह के मार्ग बताए। प्रभु यीशु कहता है, मनुष्य का पुत्र खोये हुओं कों ढूँढ़ने और उनका का उद्धार करने आया है। क्या जक्कई के समान हमारे अन्दर यीशु को देखने की इच्छा है? क्या जक्कई के समान हम अपने जीवन की कमियों को, अपने जीवन की घटियों को परे रखकर अपनी तरफ से परमेश्वर को देखने का प्रयास करते हैं? जक्कई आगे दौड़कर पेड़ पर चढ़ जाता है। कुछ प्रयास जक्कई की ओर से होता है तो कुछ प्रयास यीशु की ओर से होता है। यीशु उससे कहता है, उतरकर आ, मैं तेरे साथ संगत्ति करना चाहता हूँ।

इस घटना में हम देखते हैं कि जक्कई तुरन्त उतरकर यीशु को आनन्द के साथ अपने घर लेकर जाता है। जक्कई के घर में जब यीशु पहुंचता है तो जक्कई के जीवन में एक बहुत बड़ा

परिवर्तन होता है। उसके जीवन में एक बहुत बड़ा उलट-फेर होता है। उसके जीवन में कुछ ऐसी भावनायें उत्पन्न होती हैं जो अब तक उसके जीवन में दिखाई नहीं दी थी। उसके जीवन में पश्चाताप् आता है। उसके जीवन में पापांगीकार आता है। लोगों के सामने खड़े होकर अपने पाप का अंगीकार करने का साहस उसके अन्दर उत्पन्न होता है।

पाप मनुष्य को शर्मिन्दा करता है। लेकिन उद्धार पाने के लिये जब हम अपने पाप का अंगीकार करते हैं, तो यह हमें परमेश्वर के राज्य में महान बनाती है। यह हमें शर्मिन्दगी नहीं, बल्कि एक अनन्त महिमा की वाचा प्रदान करता है। परमेश्वर हमें अपने अपना पुत्र बनाकर अपने राज्य में स्वीकार करने की घोषणा करता है। यीशु घोषणा करता है, "...आज इस घर में उद्धार आया है।" यदि हम भी अपने पापों का अंगीकार करके पश्चाताप् करते हैं, और यीशु को अपने जीवन का स्वामी स्वीकार करते हैं, तो आज वह हमसे से भी कहेगा, "....आज .....के घर में उद्धार आया है....आज इस जीवन में उद्धार आया है। आज यह जीवन बचाया गया है। आज यह जीवन शैतान के राज्य से निकल कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया है।

जक्कई का जीवन हममें से हर एक के लिये प्रेरणादायक है। हमारे जीवन में चाहे जितनी भी बाधाएँ हो, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये कितनी भी रुकावटें हों, जक्कई का जीवन हमें आशा देता है कि यीशु हमारे जीवन में आ सकता है। हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। हम परमेश्वर की सन्तान बन सकते हैं....परमेश्वर के द्वारा दिये गये उद्धार का वारिस बन सकते हैं। "...क्योंकि यीशु खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।" **(उत्तम चुनाव नामक पुस्तक से साभार)**

दीवट

शिमोन खलखो, बिलासपुर

लोग दीपक जलाकर दीवट के नीचे नहीं रखते हैं क्योंकि इससे किसी को प्रकाश नहीं मिलेगा। परिणाम यह होगा कि दीपक जलाने के बावजूद सब अंधकार में रहेंगे। वहीं दीपक को किसी ऊँचे स्थान पर रखने से घर के सभी लोगों तक प्रकाश पहुँचता है और तभी घर के प्रत्येक सदस्य तक प्रकाश पहुँचता है और संपूर्ण घर में प्रकाश रहता है। दीवट क्या है? प्रका. 1:20 स्पष्ट कहता है कि सात दीवट सात कलीसियायें हैं जो प्रभु यीशु पर विश्वास करती और उसके बताये मार्गों पर चलती है। उन्ही को प्रभु ऊँचे स्थान पर रखता है ताकि वे दूसरों को प्रकाश दे सकें...उन्हे जो अब तक संसार के प्रकाश को ही जानते और पहचानते हैं। उन्हे सही प्रकाश और सही मार्ग दिखाये जाने की आवश्यकता है। कलीसिया की तुलना प्रभु साने के दीवटों से करता है। मानो कलीसिया भी प्रभु के लिये सोने की तरह बहुमूल्य है। सोने को चाहे हथौड़े सी पीट डालो या आग में डालो वह अपना स्वभाव नहीं छोड़ता है। उसकी चमक में निखार ही आता है। ठीक वैसे ही हमें भी अपने ईश्वरीय गुणों को नहीं छोड़ना है जो परमेश्वर ने हमें दिया है। इन गुणों को मनुष्यों के सामने चमकना है। इस प्रकार हमारे भले कामों से हमारे स्वर्गीय पिता की महिमा होती है।

हमारे जीवन में कई बार दुःख और परेशानियाँ आती हैं। तब हम इस चमक को खोने से लगते हैं। हम भूल जाते हैं कि हमारे जीवन से परमेश्वर का उद्देश्य क्या है।परमेश्वर हमारे जीवन से चाहता है कि कलीसियाई जीवन में परमेश्वर के वचन के अनुसार चलें। उदाहरण के लिये, अयूब 1:1 कहता है कि अयूब खरा, सीधा,

परमेश्वर का भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला था। वचन में हम पढ़ते हैं कि उसके जीवन में ऐसी परीक्षा आई जिसने उसे हिलाकर रख दिया। उसका सब कुछ नष्ट हो गया। परन्तु इतना सब होने पर भी वह अपने विश्वास पर स्थिर रहा। उसने परमेश्वर को पुकारना नहीं छोड़ा। सबने अयूब को छोड़ दिया फिर भी वह कहता है कि इस संसार में खाली हाथ आया हूँ और खाली हाथ जाऊँगा। उसने कभी भी परमेश्वर के विषय में कोई नकारात्मक बात नहीं कही। बल्कि उसने परमेश्वर की स्तुति की।

1 तीमुथियुस 6:12 में पौलुस कहता है कि विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ और उस अनुत जीवन को धर ले जिसके लिये तू बुलाया गया है और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था। 2 तीमुथियुस 4:6 में पौलुस कहता है कि मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ। मैंने अपनी दौड़ पूरी की है। मैंने विश्वास की रखवाली की है। पौलुस क्यों ऐसा कहता है? वचन कहता है कि उसके जीवन में कई प्रकार की बीमारियाँ आईं, मृत्यु का भय भी सताया, फिर भी उसका विश्वास कभी कम नहीं हुआ। वह विश्वास में स्थिर रहा। उसने परमेश्वर की चमक को कभी अपने जीवन में बुझने नहीं दिया और परमेश्वर के वचन को लोगों तक पँहुचाया। पौलुस के अनुसार मनुष्य को परमेश्वर अपने विश्वास को कमजोर नहीं होने देना चाहिये। बल्कि अपने विश्वास की रखवाली करनी है।

प्रकाशितवाक्य 3:15-20 मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूँ उन सबको उलाहना और ताड़ना देता हूँ। हमें यह नहीं सोचना नहीं चाहिये कि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ तो मुझे कोई परेशानी वा तकलीफ नहीं होगी। यहाँ पर एक कलीसिया है जिससे परमेश्वर प्यार करता है। किन्तु यह कलीसिया परमेश्वर से प्यार नहीं करती है। परमेश्वर कहता है कि मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू न तो ठंडा है न गर्म, मैं तुझे अपने मुँह में से उगलने पर हूँ। इस कलीसिया के काम परमेश्वर ग्रहण नहीं कर पा रहा है। इसलिए वह उसे अपने मुँह में से उगलने जा रहा है। यह कलीसिया स्वयं को धनवान समझती है। किन्तु प्रभु की नजरों में वह कंगाल और तुच्छ है। मुख्य समस्या इस कलीसिया के साथ यह है कि वह परमेश्वर को भूल गई है। इसिलिये परमेश्वर इस कलीसिया को अभागा संबोधित करता है। आत्मिक बातों को न देख पाने के कारण परमेश्वर इस कलीसिया को अंधा कहता है। परमेश्वर के सामने इनके सारे गुप्त काम भी प्रगट हैं। अपना नंगापन ये परमेश्वर के सामने छिपा नहीं सकते हैं।

यिर्मयाह 9:23-24 में परमेश्वर यिर्मयाह के द्वारा कहता है कि बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमंड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे। जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमंड करे कि वह परमेश्वर को जानता और समझता है। क्योंकि ये बातें परमेश्वर को प्रसन्नता देदेती है।

परमेश्वर ने हमें ऊँचा स्थान दिया है। इसका उद्देश्य यह है कि हम उसके वचन को लोगों तक पहँचायें। हम दीवट पर रहकर दूसरों को प्रकाश दें। लेकिन हम अपने भौतिक बातों में घमंड करने लगते हैं जिससे हम परमेश्वर से दूर होते जाते हैं। परमेश्वर के हमारे प्रेम में वह गर्माहट नहीं रहती जो प्रारंभ में थी। इसिलिये प्रका. 3:20 में यीशु द्वार खोलने का आह्वान करता है।

शब्द पहेली

इस शब्द पहेली में यहोशू की पुस्तक से दस व्यक्तियों के नाम दिये गये हैं। इन्हें बायें से दायें, ऊपर से नीचे और आड़ी दिशा में ढूंढ़िये।

ब	ना	र	गी	ती	नै	न	ए
र	र	ओ	बे	द	नि	स	ली
न	सु	गि	मी	ना	र्ग	हो	मे
बा	कि	र्प	यो	मो	म	या	ले
स	ल्यो	कू	स्ति	कु	रू	हू	क
न	न	त	ए	तु	त	उ	र
न	ग	पे	य	ने	ज्रा	हे	द
त	बु	रे	ले	लि	आः	ल	ख
बो	म	स	ला	यु	द	यु	ना
अ	क	ला	तु	ओ	र्पा	स	ना
ज	बि	ल	की	द	त	म	ल

सिद्ध उपहार

क्या आपने बड़े दिन की सारी खरीददारी कर ली है? नहीं!! पर क्यों?क्या कहा? आपको नहीं मालूम आपकी जरूरत क्या है? आपको नहीं मालूम कि साईज़ और रंग क्या होना चाहिये? (कुछ वर्ष पहले मेरी बहन ने मेरे लिये एक शर्ट लाया था। परन्तु मैं ने उसे आज तक नहीं पहना क्योंकि मुझे उसका रंग पसंद नहीं था। शायद उसे मेरे पसंद नापसंद के बारे में पता नहीं था।)

परन्तु परमेश्वर जानता है कि हमें क्या चाहिये। वह हमें सिद्ध और श्रेष्ठ उपहार देता है। आईये, देखें कि परमेश्वर ने हमें क्या उपहार दिया और वह हमारे कितने काम का है।

1. उद्धारकर्ता का उपहार परमेश्वर ने हमें सबसे कीमती उपहार दिया है। सच पूछो तो हमें इसी की आवश्यकता थी। लूका 2:11। अपने एकलौते पुत्र को उसने हमारे लिये दे दिया। इस उपहार के विषय में उत्पत्ति 3:15 में प्रतिज्ञा की गई थी। यह सही समय पर दिया गया उपहार था। गलतियों 4:4।

2. उद्धार का उपहार जिस वस्तु की हमें बहुत आवश्यकता हो उसी वस्तु को यदि कोई हमें उपहार स्वरूप दे तो हम कितना अधिक प्रसन्न होंगे। परमेश्वर ने भी यही किया। उसने मनु ष्य की सबसे बड़ी जरूरत को उसे उपहार में दिया। अर्थात उद्धार...। यूहन्ना 3:16, इफिसियों 2:8,9, रोमियों 6:23 जी हाँ, आज मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता परमेश्वर के साथ सही संबध बनाना है।

3. पवित्रात्मा का उपहार यीशु जब इस संसार में मानव रूप में था जब ही उसने शिष्यों से प्रतिज्ञा की थी कि वह एक सहायक भेजेगा। जो उनके भीतर वास करन वाला व्यक्ति होगा....सामर्थ देने वाला व्यक्ति होगा... उन्हे शिक्षा देने वाला व्यक्ति होगा। यूहन्ना 14:16-18, 26

4. उपहार मिलने पर आप को क्या करना है?

अ. इसके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें। 2 कुरिन्थियों 9:15

ब. उसे स्वीकार करें 1 तीमुथियुस 4:14

स. उसे दूसरों के साथ बांटिय। 2 तीमुथियुस 1:6,7

ए. जे.

बाइबल ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक - 9

नोट : सभी प्रश्न यहोशू की पुस्तक से लिये गये हैं।

1. यहोशू के पिता का नाम क्या था? 1:1
2. भेदियों को राजा से बचाने के लिये राहाब ने क्या किया? 2:4
3. इस्राएलियों को उनके शत्रुओं से किसने विश्राम किया? 23:1
4. प्राचीन काल में इस्राएलियों के पुरखा कहाँ रहते थे और किसकी उपासना करते थे? 24:2
5. हेब्रोन,दबीर, अनाब जैसे पहाड़ी देश में कौन लोग रहते थे? 11:21
6. यहोशू ने लोगों से किस बात का निर्णय करने का आह्वान किया? 24:15
7. यहोशू जिस हाथ से बर्छा बढ़ाया था उसे कब तक न खींचा? 8:26
8. यहोशू को नंगी तलवार लिये दूत का दर्शन कहाँ मिला? 5:13
9. यरीहो का पतन किस प्रकार हुआ? 6 अध्याय
10. गिलगाल का महत्व क्या है? 3: 15

नियम और शर्तें :

- पहेलियों के हल प्राप्त होने की अंतिम तिथि दिसंबर 30 है।
- धर्मशास्त्र से मेल खानेवाले उत्तर ही मान्य होंगे। उत्तरों के साथ बाइबल संदर्भ देना अनिवार्य है।
- सभी प्रश्नों के सही हल भेजने वाले ही विजेता घोषित किये जाएंगे।
- कृपया अपना नाम और पता साफ-साफ अक्षरों में लिखें।
- सभी हल पोस्टकार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर भेजें।
- सभी विजेताओं को एक अमूल्य पुस्तक उपहार स्वरूप दी जायेगी।

-जीवन का मार्ग, पोस्ट बॉक्स् नं. 27, बिलासपुर - 495 001. छ.ग.

How to Pray to the Lord?

When it comes to the subject of prayer, one question often arises : Exactly how do we pray to the Lord?

If you do not learn how to properly pray to the Lord, you are never going to be able to fully accomplish all of your divine destiny for Him, as there will be many times in your journey with God that He is simply going to have to answer some of your personal prayers if anything is ever going to get accomplished.

If God does not answer some of your personal prayers from time to time, then you are never going to make it from one step to another. There will be no promotions and advancements. If God is not listening to and answering some of your specific prayer requests, then you will never find who you were supposed to be marrying in this life and which jobs you were supposed to be taking. And if you do not take the specific jobs God will be wanting you to take in this life, then you will never reach what your true calling and divine destiny would have been in Him in this life.

In our article titled, "The Basics of the Christian Walk," we give you 10 basic areas you will need to focus on if you want to enter into the real walk with our Lord. And one of these areas is developing a good, strong, prayer life with the Lord.

If you do not develop a good, strong, prayer life with the Lord, you will never make it out of the dugout in your divine destiny with the Lord. You will forever stay benched in that dugout, as you will find out very quickly that only God has the full supernatural power to really make anything happen in your life.

As Jesus has already told us, you will end up laboring in vain if you try to build the house of your life instead of letting God build the house of your life. In other words, God has to be in total control of every aspect and detail of your life if you are ever going to have any chance of fully complet

ing all of His perfect plan and destiny for your life.

Since so many people continue to ask us this question on how to pray to the Lord, I thought I would draw up this article for all of them. Even though some of these specific areas will be talked about in depth in some of the other articles in our Prayer Secrets section, I want to put all of this together in a nice, neat, outline format so you can see exactly what you will need to focus on so you can develop that good, strong, prayer life with the Lord.

Here are 10 good, basic, prayer strategies you can take with the Lord that will really help you in being able to establish that good, strong, prayer life with Him. I will first list them in a numbered, bolded format so you can have all of them right at the top of this article. Then I will go into each one of them individually so you can see exactly what you will need to do with each one of them.

1. There is No "Set" or "Magical" Way to Pray to the Lord

2. Pray to God the Father in the Name of Jesus Christ

3. Seek to Establish a Good, Personal Relationship With the Lord

4. Make Sure Your Prayers Always Line Up With the Perfect Will of God for Your Life

5. Back Up Your Prayers With Specific Scripture Verses When Appropriate

6. Do Not Be Afraid to Actually Write Your Prayers Out to the Lord

7. Do Not Be Afraid to Go Into Prevailing Type Prayer When It Will Be Needed

8. Ask the Holy Spirit to Help You With Your Prayer Life

9. Ask Others to Pray in Agreement With You When It Will Be Needed

10. Always Include Prayers of Thanksgiving From Time to Time.

रंग भरो

उपलब्ध पुस्तकें

10 से अधिक प्रतियों पर विशेष छूट!!

1 2 3 4 5 6 7

15 16 17 18 19 20 21

हिन्दी पुस्तकें : 1. आत्मिक गीतावली (100/-), 2. बपतिस्मा वनाम मसीह की सहाभागिता (मुफ्त), 3. चट्टान पर नींव डालने वाला (50/-), 4. जोनी (30/-), 5. जॉर्ज मूलर (40/-), 6. नई सुबह (25/-), 7. मृत्यु, मृत्यु की घाटी और परमेश्वर की शरण (मुफ्त)

हिन्दी बाइबल : 8. पवित्र बाइबल सामान्य (120/-), 9. पवित्र बाइबल सामान्य कवर के साथ (200/-), 10. पवित्र बाइबल थम्ब (700/-), 11. पवित्र बाइबल गोल्डन-१ (700/-), 12. पवित्र बाइबल गोल्डन-२ (700/-), 13. पवित्र बाइबल फलैप (700/-), 14. पवित्र बाइबल अंग्रेजी-हिन्दी (1000/-), 15. पवित्र बाइबल बड़ा अक्षर (300/-), 16. सचित्र बच्चों की बाइबल (120/-), 17. पवित्र बाइबल गोल्डन बिना चैन के (500/-)

English Bible : 18. Good News Bible (100/-), 19. The Devotional Study Bible (120/-),20. Holy Bible Key (125/-),21. Holy Bible Good news edition (120/-).

प्रतियाँ प्राप्त करने के लिये संपर्क करें -

Sanctuary Literature Service
P.B. N0. 27, Bilaspur, C.G- 495 001.
Cell Phone : +91 94255 49016